वैश्वीकरण : मीडिया और हिन्दी

डॉ० अनीता रानी
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म महिला महाविद्यालय, नरवाना (जीन्द)

वैश्वीकरण के युग में हिन्दी भाषा का वर्चस्व बढ़ा है। हिन्दी विश्व के 73 देशों में अपना स्थान बना चुकी है। आज हिन्दी का स्वरूप वैश्विक हो चला है। आज हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पकड़ लगातार मजबूत कर रही है। 'एथनालोग पत्रिका ने 18 फरवरी 2020 को दुनिया की जीवन्त भाषाओं पर अपना वार्षिक डाटाबेस प्रकाशित किया जिसमें उसने हिन्दी को दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बताया है। आज दुनिया में लगभग 45 से अधिक देशों के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी को पढ़ा व पढ़ाया जा रहा है।

हिन्दी के वैश्विक सन्दर्भ में डॉ० सुरेश माहेश्वरी लिखते हैं – ''आज विश्व में भारत ने अपनी पहचान बना ली है। भारत एक स्वतन्त्र जनतान्त्रिक राष्ट्र है। गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों का मुखिया भारत है। सार्क परिषद का प्रणेता और संस्कृति की दृष्टि से भी वह विश्व का पथ प्रदर्शक और अगुवा है। ऐसे भारत की भाषा हिन्दी है। इसलिए यदि भारत से निकटता बनानी है तो हमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन को महत्त्व देना चाहिए।

सन्देह नहीं है कि हिन्दी को वैश्विक धरातल पर अपनी पहचान कायम करवाने में मीडिया की अग्रणी भूमिका रही है। संचार मानव समाज की उत्पत्ति के बाद सामाजिक अन्तक्रियाओं एवं सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर विकसित होने वाली एक प्रक्रिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने जनसंचार के साधनों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर इन्हें अत्यधिक उन्नत किया है। यदि संचार के साधनों के विकासक्रम को देखा जाए तो ज्ञात होता है कि सबसे पहले प्रिटिंग प्रैस का अविष्कार हुआ। इसके द्वारा संदेश, सूचना एवं विचारों को पुस्तको, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया, इसे प्रिंट मीडिया कहा जाता है। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ मीडिया के साधनों में भी अनेक परिवर्तन हुए। आज तो प्रिटिंग प्रैस में छापने की तकनीक इतनी विकसित हो चुकी है कि कम से कम समय में अधिकतम सामग्री को प्रकाशित किया जा सकता है। प्रिन्ट मीडिया के बाद इलैक्ट्रानिक मीडिया के अन्तर्गत सबसे पहले रेडियो ही इलैक्ट्रानिक मीडिया का साधन था, लेकिन विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने 20वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में इलैक्ट्रानिक मीडिया में भी नई-नई तकनीक से नए-नए साधन विकसित कर दिए। इसके बाद 21वीं शताब्दी में इलैक्ट्रानिक कम्प्यूटर और संचार का अत्यधिक विकास हुआ। आज मीडिया के अन्तर्गत सोशल मीडिया का भरपूर प्रयोग हो रहा है। आज संचार के जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है, उनमें इन्टरनेट की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मीडिया हिन्दी भाषा की पहचान को वैश्विक धरातल पर स्थापित करने में मीडिया एक सशक्त भूमिका निभा रहा है। वैश्विक पटल पर हिन्दी भाषा की महत्ता स्थापित करने में प्रिन्ट मीडिया, इलैक्ट्रानिक मीडिया के साथ-साथ सोशल मीडिया का भी महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्छी फिल्मों को विश्व के अनेक देशों में खूब पसन्द किया जा रहा है। इसिलिए हिन्दी फिल्मों का अनुवाद विश्व की लगभग सभी भाषाओं में किया जा रहा है। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी फिल्मों व धारावाहिकों की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। सिनेमा, गीतों और सीरियलों के माध्यम से भी विदेशों में हिन्दी भाषा की लोकप्रियता बढ़ रही है। यहाँ तक कि ग्रामीण व आदिवासी इलाकों तक इसकी पहुँच दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब मनोरंजन और समाचार चैनलों की लोकप्रियता निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो चुकी है। विकसित राष्ट्रों में भी भारत के प्रमुख हिन्दी चैनलों को देखा जा सकता है। हिन्दी के प्रमुख राष्ट्रीय दैनिकों के अन्तर्राष्ट्रीय संस्करण इन्टरनेट पर उपलब्ध हो रहे हैं। आज विश्व में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिन्दी भाषा के हैं।

हालीवुड और बालीवुड के प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में हिन्दी को फिल्मों के माध्यम से पूरे विश्व में पसन्द किया

ISBN: 978-81-954645-0-0

जा रहा है, इससे हिन्दी को विश्व स्तर पर सम्मान मिला है।

मीडिया के परम्परागत माध्यमों के साथ-साथ अब हमारे सामने नया मीडिया भी हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर परचम फहराने में अपना सराहनीय योगदान दे रहा है। इस नये मीडिया को सोशल मीडिया के नाम से भी जाना जाता है। इसमें अखबार की तरह टैक्सट भी हैं और रेडियो की तरह ध्वनि भी, टैलीविजन की तरह चलचित्र भी। जब इस सोशल मीडिया में दृश्य व श्रव्य दोनों ही इस माध्यम से मिल जाते हैं तो यह एक अत्यन्त प्रभावशाली विशिष्ट माध्यम बन जाता है।

आज सोशल मीडिया में भी हिन्दी का प्रयोग भरपूर हो रहा है। मोबाइल पर हिन्दी एप्स की संख्या में लगाता इजाफा हो रहा है। यूनीकोड आ जाने से कम्प्यूटर में हिन्दी टाइपिंग की समस्या अब दूर हो गई है। सूचना तकनीकी के क्षेत्र में आई क्रान्ति के परिणामस्वरूप आज इन्टरनेट के माध्यम से हिन्दी का ई-पुस्तकालय देश के साथ-साथ विदेशों में बढ़ती हिन्दी पुस्तकों की खरीदारी, हिन्दी में विज्ञापन, हजारों की संख्या में निशुल्क ब्लाग, प्रतिदिन नए-नए आ रहे प्रकाशनों की जानकारी इत्यादि अनेक सुविधाएँ अब मीडिया के माध्यम से सुलभ हो रही हैं। ई-कॉमर्स की वेबसाइट चाहे वह स्नैपडील हो या फिल्पकार्ट सभी मोबाइल एप्स हिन्दी में सुविधा देते हैं। निसन्देह इन सब तकनीकी प्रगतियों ने भी हिन्दी को वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी एक पहचान दिलवाने में अपना अहम योगदान दिया है।

श्री राकेश कुमार ने अपने लेख 'नए मीडिया ने बदली हिन्दी की चाल' में इस नये मीडिया की हिन्दी को देन पर विचार रखते हुए कहा है कि ''अखबार की ताकत उसके शब्द होते हैं। रेडियो की ताकत ध्वनि और सिनेमा तथा टेलीविजन की ताकत उसके दृश्य होते हैं। आज आम आदमी मीडिया का मात्र उपभोक्ता ही नहीं अपितु वह मीडिया का उत्पादक भी है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि मीडिया ने हिन्दी के स्वरूप और विकास दोनों दृष्टियों से हिन्दी को वैश्विक बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाई है।

सन्दर्भ गन्थ सूचि :

1. डॉ. सुरेश माहेश्वरी (सम्पादक) हिन्दी राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा की ओर पृ.सं. 100
2. साहित्य अमृत, सितम्बर 2010
3. राजभाषा भारती, अप्रैल-जून 2018, अंक 155
4. गिरीश्वर मिश्र (प्रधान सम्पादक) बहुवचन

ISBN: 978-81-954645-0-0